राजीव गाँधी विश्वविद्यालय
रोनोहिल्स,दोइमुख, अरुणाचल प्रदेश

हिंदी विभाग

वैश्विक महामारी के दौर में हिंदी मीडिया

तीन दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय वेब-सिम्पोजियम

24-26 जून, 2020

1. आयोजक मण्डल :

संरक्षक : प्रो. साकेत कुशवाहा, कुलपति, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, ईटानगर

विभागीय आयोजन समीति :

- प्रो. ओकेन लेगो, भाषा संकायाध्यक्ष
- डॉ. श्याम शंकर सिंह, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग
- डॉ. जोराम यालाम नाबाम, सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
- डॉ. जमुना बीनी तादर, सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
- डॉ. सत्य प्रकाश पाल, सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग

सलाहकार समीति :

- डॉ. शंभू प्रसाद, सहायक प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा विभाग
- डॉ. सुमिन प्रकाश, सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग

संयोजक :

- डॉ. राजीव रंजन प्रसाद, सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
- डॉ. विश्वजीत कुमार मिश्र, सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग

2. तीन दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय वेब-सिम्पोजियम :

2.1 **संकल्पना बिंदु :** 30 मई को हिंदी पत्रकारिता दिवस मनाते हैं। यह दिन खास है, क्योंकि हिंदी भाषा में नई सोच, आधुनिकता और प्रगतिशील सोच को लाने अथवा बहाल करने में हिंदी पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका अतुलनीय रही है। राजा राममोहन राय के सुधार आन्दोलन से शुरू हुई भाषाई पत्रकारिता हिंदी में 'उदन्त मार्तण्ड' साप्ताहिक समाचार-पत्र के साथ उदित होती है। इस पत्र को भारतवर्ष का पहला हिंदी समाचार-पत्र कहलाने का गौरव प्राप्त है जिसकी परिकल्पना पंडित युगल किशोर शुक्ल ने की और 30 मई, 1826 ई. को

भारतीय हिंदी मीडिया की विधिवत स्थापना करते हुए भविष्य के मार्ग प्रशस्त किए। हिंदी भाषा के उत्तरोत्तर विकास से हिंदी पत्रकारिता समृद्ध होती है और उसमें कई सारी विभूतियाँ जुड़ती चली जाती हैं। आगामी दिनों में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रताप नारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, बालमुकुन्द गुप्त, दुर्गाप्रसाद मिश्र और महामना मदन मोहन मालवीय की पत्रकारिता से होते हुए हिंदी पत्रकारिता नित नए सोपानों और सफलताओं को प्राप्त करती है जिसमें महात्मा गाँधी, तिलक, भगत सिंह, आम्बेडकर, प्रेमचंद, बाबूराव विष्णु पराड़कर, गणेश शंकर विद्यार्थी, माखनलाल चतुर्वेदी, रघुवीर सहाय, राजेन्द्र माथुर, कमलेश्वर, प्रभाश जोशी, आलोक मेहता जैसे योद्धा पत्रकारों का योगदान द्रष्टव्य है। आज की कठिन घड़ी और चुनौतीपूर्ण स्थिति में जब पूरी दुनिया एक ऐसी वैश्विक बीमारी कोविड-19 की चपेट में है जहाँ 'लोकल' से 'ग्लोबल' हुई दुनिया के सारे फार्मूले और सिद्धांत धराशायी हो गए हैं, पत्रकारिता ऐसे संकटग्रस्त समय में पूरी दुनिया के समक्ष सूचना-संप्राप्ति का जरूरी 'टुल्स' बनती दिख रही है। हिंदी मीडिया इस बड़ी मुहिम, संघर्ष या कहें लड़ाई में चेतस ढंग से सामने है और जन-समर्थन और जनपक्षधर कार्रवाई में उसकी भूमिका या प्रासंगिकता का प्रश्न असंदिग्ध हो चला है। सम्प्रभु राष्ट्र की समस्त आबादी के प्रति मीडिया की कर्तव्यनिष्ठा और उनका समर्पण-भाव स्तुत्य है तथा इस दिशा में संवेदनशील और उत्तरदायी ढंग से सोचे-समझे जाने की आवश्यकता है। विशेषकर उत्तर-पूर्व के राज्यों में हिंदी मीडिया पर विचारशील होना और कोरोना महामारी के इस मुश्किल समय में हिंदी मीडिया द्वारा बरती जा रही संवेदनशीलता तथा एहतियात के मद्देनज़र हिंदी मीडियाकर्मियों की अंतःबाह्य चुनौतियों व खतरों का जायजा लिया जाना बेहद आवश्यक है। यह परिसंवाद इसलिए भी आवश्यक है कि ईस्वी सन् 30 मई, 1826 को पंडित युगल किशोर शुक्ल के सम्पादकत्व में हिंदी पत्रकारिता ने जो आरंभिक यात्रा तय की थी वह आज इक्कीसवीं सदी में अपने उद्देश्य की प्राप्ति और जनहित के प्रयास और लोकसत्ता बनने के उपक्रम में कितना सफल और महत्त्वपूर्ण साबित हो चुका है; इसकी सही-सटीक जानकारी अथवा सूचना मिल सके। मौजूदा समय में मीडिया के लोकवृत्त में इजाफा और पारम्परिक माध्यमों से लेकर आभासी नवमाध्यमों तक पैठ के अतिरिक्त साहित्य-सिनेमा और विज्ञापन के क्षेत्र में भी मीडिया की भूमिका और प्रभाव प्रत्यक्ष है। उपर्युक्त विषयवस्तु को ध्यान में रखते हुए हिंदी विभाग, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय के परास्नातकीय प्रयोजनमूलक हिंदी डिप्लोमा पाठ्यक्रम की और से एक दो दिवसीय वेब-सिम्पोजियम 'वैश्विक महामारी के दौर में हिंदी मीडिया (भाषा, साहित्य, सिनेमा और पूर्वोत्तर)'विषयक शीर्षक से 30-31 मई, 2020 को प्रस्तावित है जिसमें अपने विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं विश्वविद्यालय संकाय सदस्यों के साथ पूरे देशभर के मीडिया विशेषज्ञ जुडेंगे तथा कोविड-19 के वर्तमान आपदाकालीन स्थितियों-परिस्थितियों के बीच हिंदी मीडिया की भूमिका, महत्त्व एवं प्रासंगिकता पर परस्पर चर्चा-परिचर्चा, वाद-संवाद इत्यादि करेंगे।

2.2 **विषय/उप-विषय :** ब्रोशर में सन्दर्भित

2.3 **विषय-विशेषज्ञ :**

- श्री येशे दोर्जी थोङची
- श्री रविशंकर रवि
- श्री अकु श्रीवास्तव
- श्रीमती अमृता मौर्य

- डा. धीरे न्द्र कुमार राय
- डा. संदीप कुमार वर्मा
- प्रो. पवित्र श्रीवास्तव
- डा. राजनारायण अवस्थी
- श्री दिनकर कुमार
- डा. अनुशब्द
- श्री कपिल कुमार
- श्री प्रताप सोमवंशी
- डा. मिहिर रंजन पात्र
- डा. किशोर वासवानी
- डा. संदीप भट्ट
- प्रो. एम. वेंकेटेश्वर
- प्रो. हितेन्द्र मिश्र
- डा. मनोहर लाल
- डा. मियाजी हज्जाम
- चयनित प्रतिभागी : वक्तव्य
- श्रीमती वान्या गांचेवा
- प्रो. मौना कौशिक
- प्रो. संजय द्विवेदी
- श्री संदीप सिसौदिया

2.4 आयोजन सहयोग: राजीव गाँधी विश्वविद्यालय

2.5 सहयोग राशि : बीस हजार रुपए